RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु
वर्ष: 74 अंक : 23
सृष्टि संवत् 1960853118
3 सितम्बर, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-74, अंक : 23, 31 अगस्त-3 सितम्बर 2017 तदनुसार 19 भाद्रपद सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सब काव्य-वचन उसी के लिए

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अस्मा इत्काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम्।
तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः।।
-ऋ० ५।३९।५

शब्दार्थ-अस्मै = इस **इन्द्राय** = इन्द्र के लिए **इत्** = ही **काव्यम्** = कवियों का कमनीय **उक्थम्** = प्रशस्त तथा **शंस्यम्**= प्रशंसनीय **वचः** = वचन है। **तस्मै+उ** = उस ही **ब्रह्मवाहसे** = ब्रह्मधारक, वेदधारक, ब्रह्मनिष्ठ के लिए **अत्रयः** = त्रिदोषरहित-मिथ्या-परुष-असम्बद्ध दोषों से शून्य **गिरः** = वाणियाँ **वर्धन्ति** = बढ़ती हैं और **अत्रयः** = भोजनसामग्री देने वाली **गिरः** = वाणियाँ **शुम्भन्ति** = शुभाचरण कराती हैं।

व्याख्या-वेद काव्य है। भगवान् को **'कविर्मनीषी'** [यजु:० ४०।८] बुद्धिमान् कवि कहा गया है। उसके दो काव्य हैं एक वेद, जो **वचः** = वचनात्मक है, दूसरा उसकी कृति जगत्। ये दोनों ही **अस्मै इत् इन्द्राय** इसी जीव के लिए हैं। यह काव्य **'वचः'** वेदवचन **'उक्थ'** कहने योग्य है, अर्थात् पढ़ने-पढ़ाने योग्य है। यह **'शंस्यम्'** प्रशंसा के योग्य है। जो इस उक्थ, शंस्य काव्य= वचन को आत्मसात् कर लेता है, अपना जीवन उसके अनुसार बना लेता है-**'तस्मै उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयः'** = उस ब्रह्मधारक, ब्रह्मनिष्ठ, वेदानुयायी के लिए ही त्रिदोषरहित वाणियाँ बढ़ती हैं। वेद सब वाणियों का मूल है, सबसे पहले वेद ही मनुष्य को प्राप्त हुआ। वेद द्वारा ही वाणी तथा ज्ञान संसार में फैले। जिसने समस्त वाणियों के मूल पर अपना अधिकार कर लिया, समस्त संसार की स्तुतियों का वह अधिकारी हो जाता है। लोक उसकी महिमा का बखान करने के लिए नित्य नये-नये काव्य रचते हैं। दूर-दूर तक उसकी कीर्ति का कीर्तन करते हैं। आस्तिकों की वाणी में भी कभी-कभी तीन-अनृत, कठोर तथा अप्रासङ्गिक भाषणरूप-दोष आ जाया करते हैं, किन्तु ब्रह्मनिष्ठों की सच्ची स्तुतियाँ की जाती हैं। वेदवाणियाँ-अत्रयः-त्रिदोषरहित होती हैं।

उनकी कोरी प्रशंसा ही नहीं होती, वरन् उन्हें अन्नादि खाद्यसामग्री की कमी भी नहीं रहती।

जिनके पास ज्ञान की खान हो, वह उसके द्वारा धन-धान्य अर्जन कर सकता है। यह ठीक है, ब्रह्मवित् महात्मा धन में आसक्त नहीं होता, धन को-प्राकृतिक धन-सम्पत्ति को अपने जीवन का लक्ष्य नहीं बनाता, वह ब्रह्म को ही परम धन मानता है। उसको यदि ब्रह्मधन तथा लोकधन दो में से चुनने को कहा जाए, तो निःसन्देह वह ब्रह्मधन का वरण करेगा, किन्तु उसे यह भी ज्ञान है कि यह सम्पूर्ण ऐश्वर्य भी उसी के लिए है। शरीर यात्रा के लिए सांसारिक धन की अपेक्षा होती है, अतः वह उसकी उपेक्षा नहीं करता। यह ठीक है वह उसके पीछे भागता भी नहीं है।

इस बात को कभी भी नहीं भूलना चाहिए कि वेद सरस्वती और लक्ष्मी का विरोध नहीं मानता। इस मन्त्र में भी उसकी ओर सङ्केत है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत-कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आयुर्यज्ञेन कल्पताम् यज्ञ हुआ आजीवन हुआ न जीवन यज्ञ

-ले० देव नारायण भारद्वाज 'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग अलीगढ़, उ. प्र.

दो मित्र उद्यान में बैठकर बात कर रहे थे, और अपने पूर्वजों की महिमा का बखान कर रहे थे। क्षितिज की ओर देखकर एक बोला-हमारे बाबा ने 'इतना बड़ा-इतना बड़ा' दालान बनवाया था, जो क्षितिज से भी आगे निकला हुआ था। दूसरा बोला हमारे बाबा भी बड़े चमत्कारी थे। उन्होंने 'इतना लम्बा-इतना लम्बा' बाँस बनाया था, जिसकी सहायता से आकाश में घुमाकर बादलों से बरसा करवा लेते थे। पहले मित्र ने यह सुनकर पूछ लिया-वे उस बाँस को रखते कहाँ थे ? दूसरे मित्र ने सहज भाव से उत्तर दे दिया-'इसमें क्या कठिनाई, वे उसे रखते थे-तुम्हारे बाबा के दालान में। यह बात आज भी उन लोगों पर सटीक बैठती है, जो बड़े गर्व के साथ कह दिया करते हैं-हमारे बाबा जी पक्के आर्य समाजी थे। उनका हवन कुण्ड विशाल था, और उसकी धूम आसमान तक जाती थी। ऐसी एक घटना का मुझे सामना करना पड़ा।

सवर्ण वर्गीय सामाजिक संस्था के अधिकारीगण पर्व विशेष पर स्मारक पार्क में मुझ से यज्ञ का आग्रह करते चले आ रहे थे। वह दिन आ गया और मैं वहाँ पहुँच गया। पार्क की भीड़ में यत्र तत्र सज धज के साथ एक शीर्ष व्यक्तित्व यहाँ-वहाँ वार्ता व्यस्त थे, वे समाज के सर्वाधिक सम्पन्न जनों में से एक थे। मैं जब यजमान के आसन को भरने के लिए आह्वान करने लगा; तो अधिकारियों ने उन्हीं महानुभाव को लाकर बैठा दिया। पहले से ही बैठे स्त्री-पुरुषों के समूह को हर्ष हुआ, और उन्हें यजमान पद प्राप्ति का गर्व हुआ। उन्हें देखकर यज्ञारम्भ की मेरी प्रक्रिया इसलिए रुक गयीं, क्योंकि वे मुख में पूरा पान चबाते हुए आसन पर बैठ गये। वे मुझे भला क्या जानते होंगे, जो मैं सीधे उनसे मुख शुद्धि के लिए सचेत करता। यह कार्य मैंने मुख्य पदाधिकारी के माध्यम से कराया। आशीर्वाद-शान्ति पाठ सहित यज्ञ पूर्ण हुआ। वेदी पर तो उन्होंने मुझे दक्षिणा दी नहीं, किन्तु एक कक्ष में खड़े होकर संकेत से मुझे बुलाया और हाथ में दक्षिणा राशि निकालते हुए बताना प्रारम्भ किया-मेरे बाबा पक्के आर्यसमाजी एवं निष्ठावान् याज्ञिक थे। लम्बी रेलयात्राओं में भी नित्य कर्म से निवृत होकर यज्ञ अवश्य करते थे, इसके लिए उनकी यज्ञ पेटिका साथ चलती थी। मैंने कहा बहुत सुन्दर। 'वयं स्याम पतयो रयिणाम्' (ऋ. 10.121,10) के जाप से ही तो आप धनैश्वर्यों के स्वामी बने हैं। मैंने मन में सोचा-आपने बाबा के धन को तो पकड़ लिया किन्तु यज्ञ-ऐश्वर्य को छोड़ दिया।

यज्ञ करने से भी क्या होता है। सर्वांश में नहीं, अधिकांश में यज्ञ करने वाले 'स्वाहा-इदन्नमम' का उच्चारण करते हुए घृत-सामग्री की आहुतियाँ लगाते रहते हैं तथा इसकी सुगन्ध को भी फैलाते रहते हैं, और इस प्रकार वे बाह्य वातावरण को तो शोधित कर लेते हैं, किन्तु इसके सार स्वत्व से अपने अन्तः करण की परिशोधन प्रक्रिया पर किञ्चित ध्यान नहीं देते हैं, और जो मन्त्रोच्चारण करते हैं, उससे उनका आचरण उत्कृष्ट न होकर कृष्ट या निःकृष्ट हो बना रह जाता है। यही कारण है कि घर-परिवार हो अथवा संगठन सर्वांश में नहीं तो अधिकांश में देव पूजा (बड़ो का मान) पारस्परिक संगतीकरण एवं दान में दुरुपयोग के उदाहरण परिलक्षित होते हैं। इसी यज्ञ-वेदी पर सरदार अर्जुन सिंह, पौत्र सरदार भगत सिंह, पं. राम प्रसाद बिस्मिल ही नहीं पूर्वज आर्य मनीषियों ने प्रेरणा-प्रोत्साहन प्राप्त कर वेदोत्थान व राष्ट्र-निर्माण के लिए अपने जीवन अर्पित कर दिये थे, उनके समर्पण की नींव पर संगठन का प्रासाद तो खड़ा हो गया, किन्तु आज उसकी दीवारों में लगी दीमक से रक्षा करने वालों की प्रतीक्षा बनी रहती है।

स्थिति इतनी निराशा जनक भी नहीं है। जैसे एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है, और जैसे एक बूँद विष सम्पूर्ण दुग्ध-घट को विषैला कर देती है, वैसे ही थोड़े स्वार्थी अभियोगवादियों ने विराट संगठन को विघटन का जामा पहना दिया लगता है, अन्यथा आज भी गुरुकुल, व शिक्षा जगत के आचार्य-ब्रह्मचारी-उपदेशक राष्ट्र में अपने आदर्श से आर्यकरण के अभियान में लगे हैं। देश-विदेश राष्ट्र संघ सर्वत्र विश्व-अहिंसा दिवस, विश्व योग दिवस, वेद संहिता संरक्षण, अग्निहोत्र एवं शाकाहार दिवस आदि के रूप में सात्विक संस्कार जागरण के अभियान चल पड़े हैं।

यज्ञनिष्ठ लोग चलती ट्रेन में भी अपना दैनिक यज्ञ कर लेते हैं। वैसे ही रामायण प्रेमी लोग भी प्रभात काल में स्वच्छ होकर रामायण का पाठ करके ही सुख शान्ति अनुभव करते हैं। मन्त्रों के अर्थों को समझना पड़ता है पर रामायण तो लौकिक भाषा में अर्थ स्पष्ट करती चलती है। यह सहज सुबोध अर्थ भी जीवन व्यवहार में उतरना दुर्लभ होता है। इसमें भी आर्योपदेशक यदा कदा मार्ग दर्शन करते देखे जाते हैं। प्रयागराज एक्सप्रेस के आरक्षण श्रेणी में ऐसे ही एक यात्री अपनी सीट पर बैठकर उच्च स्वर में रामायण का पाठ करते जा रहे थे और भाव विह्वल होकर आँसुओं की लड़ी बहाते जा रहे थे। यह देखकर उपदेशक महोदय ने उनकी रामायण-निष्ठा की प्रशंसा की और पाठ-प्रसंग जानने की इच्छा की। रामायणी जी ने बताया-इस समय राम-भरत मिलाप का प्रसंग चल रहा है। निश्चल प्रेम प्रवाह को अनुभव कर मेरे नेत्रों से अश्रु प्रवाह हो गया। अच्छा तो आप प्रयागराज तीर्थ में त्रिवेणी-स्नान के लिए जा रहे होंगे। यात्री ने कहा-नहीं। अच्छा तो पवित्र भारद्वाज आश्रम दर्शनार्थ जा रहे होंगे। यात्री ने कहा-नहीं। प्रादेशिक शिक्षा निदेशालय या राज्य लोक सेवा आयोग मुख्यालय में किसी काम से जा रहे होंगे। यात्री ने कहा-नहीं ! फिर तो प्रयागराज विश्वविद्यालय में अपने किसी प्रोफेसर मित्र से मिलने जा रहे होंगे। यात्री ने कहा-नहीं, और आगे प्रसंग को न बढ़ाते हुए वे बोल पड़े। महाशय ! आपको पता नहीं-प्रयागराज में उच्च न्यायालय भी है। मैं वहीं जा रहा हूँ। उपदेशक जी बोले तो आप प्रयागराज नहीं इलाहाबाद जा रहे हैं।

अच्छा तो यह बताइए वहाँ आपका क्या प्रकरण लम्बित चल रहा है ? क्या बतायें बड़े भाई से एक लघु भूखण्ड के लिये अभियोग चल रहा है। दसियों वर्ष हो गये-निर्णय नहीं हो पा रहा है। पड़ोस में रहते हुए भी बोल-चाल बन्द है। उपदेशक जी ने कहा-राम-भरत मिलाप से तो आप इतने प्रभावित हैं कि अश्रुपात कर बैठते हैं। आपने कभी सोचा है कि अयोध्या जैसे चक्रवती साम्राज्य के सिहासन को दोनों भाइयो ने गेंद के समान ठोकर मारते हुए खेल बना दिया था। भरत ने अयोध्या से दूर नन्दीग्राम में एक तपस्वी के रूप में राम की प्रतीक्षा करते हुए शासन-संचालन किया था। एक ओर राम-भरत की मिलाई पर भावुकतावश रुलाई करते हैं और अपने ही बड़े भाई से लड़ाई करते हैं। मेरा परामर्श है आगे से या तो रामायण की पढ़ाई बन्द या बड़े भाई से लड़ाई बन्द। स्टेशन आया। उपदेशक जी ने उतरते-उतरते आर्य समाज चौक जाने की बात कहते हुए विदाई ली। न्यायालय पहुँचने पर बड़े भाई जी वहाँ उनकी प्रतीक्षा करते मिले। दसियों वर्ष बाद छोटे भाई ने बड़े भाई के चरण पकड़े और क्षमा याचना की और बोले आज से भूखण्ड आपका है। अभियोग समाप्त होता है। मुझे आपका अखण्ड प्रेम चाहिये-भूखण्ड नहीं। अब साथ-साथ हँसते हुए वापस लौटेगे। पहले आर्य समाज चौक चलकर उपदेशक जी से मिलकर उनका आभार व्यक्त करते हैं। दोनों भाई वहाँ जाकर उपदेशक से मिलते हैं। उन्हीं के समक्ष बड़े भाई घोषणा करते है कि छोटे भाई का परिवार बड़ा है-इन्हें आवश्यकता है इसलिए भूखण्ड इनके परिवार के लिए छोड़ता हूँ। आर्योपदेशक ने प्रत्यक्ष घटित कर दिया-भरत मिलाप।

उस संन्ध्या उपदेशक महोदय ने जिस प्रवचन को प्रस्तुत किया, वह निम्नांकित मन्त्र पर आधारित था। प्रयाग में याग चर्चा यूँ हुई-

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। प्रजापतेः प्रजाऽअभूम स्वर्देवाऽअगन्मा-मताऽअभूम।। (यजु. 9.21)

भावार्थतः हमारा सम्पूर्ण जीवन यज्ञ से श्रेष्ठ कर्म से समर्थ हो प्राणों की शक्ति, दर्शन शक्ति, श्रवण शक्ति, पृष्ठ-पीठ सभी यश से समर्थ हों। हमारे सभी क्रिया कलाप यज्ञ से समर्थ है। हम प्रजापति परमेश्वर की सच्ची प्रजा बनें। स्वयं देव स्वरूप बनकर अपने को ही नहीं अन्यों को भी सुखी बनाने में

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

अवश्यमेव भोक्तव्यं कर्म कृतं शुभाशुभम्

गीता में योगीराज श्रीकृष्ण ने कर्मफल के महत्व को समझाते हुए अर्जुन को उपदेश दिया था कि हे अर्जुन! मनुष्य के द्वारा किए गए शुभ और अशुभ कर्मों का फल उसे भोगना ही पड़ता है। प्रत्येक मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में परतन्त्र है। यह सृष्टि का अटल नियम और परमात्मा की न्याय व्यवस्था है। इस विधान को कोई मनुष्य, महात्मा, सन्यासी, संत और फकीर नहीं बदल सकता। जिस प्रकार कमान से निकला हुआ तीर वापस नहीं आता उसी प्रकार किए गए कर्म के फल को कोई नहीं बदल सकता। नीतिकार ने कहा है कि-यो यद्वपति बीजं लभते हि तादृशं फलम् अर्थात् किसान जैसा बीज बोता है वैसी ही फसल प्राप्त करता है। इसीलिए मनुष्य को सावधानी से कर्म करना चाहिए। मनुष्य की परिभाषा निरूक्तकार लिखता है कि- मत्वा कर्माणि सीव्यति अर्थात् जो सोच विचार कर सावधानीपूर्वक कर्म करते हैं वही मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं।

डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख राम रहीम के साथ जो हुआ, वह भी कर्मफल का ही परिणाम है। ये तथाकथित उपाधिधारी संत महात्मा इस कर्मफल के रहस्य को जितना जल्दी समझ जाएं, उनके लिए उतना ही अच्छा होगा। समाज को नई दिशा और मार्गदर्शन देने के स्थान पर इन ढोंगियों के द्वारा समाज के उत्पीड़न का कार्य किया जा रहा है। लोगों को भ्रमजाल में फंसाकर करोड़ों, अरबों की संपत्ति अर्जित कर लेते हैं और फिर उस संपत्ति का प्रयोग समाज में अशाति फैलाने के लिए करते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कुछ वर्ष पूर्व कबीरपंथी रामपाल की गिरफ्तारी के समय देखने को मिला था और आज वही दृश्य राम रहीम की गिरफ्तारी के समय देखने को मिला। क्या इन ढोंगी संतों का यही काम रह गया है कि आस्था के नाम पर अपने अनुयायियों से जो मर्जी करवा लें? क्या आस्था के नाम पर लाखों, करोड़ों अनुयायी बना लेने से एक बलात्कारी की सजा को माफ किया जा सकता है? यह दुर्भाग्य है हमारे देश का, जिसमें आस्था के नाम पर दंगे भड़काए जाते हैं, गाड़ियां जला दी जाती है, सार्वजनिक सम्पत्तियों को आग के हवाले किया जाता है, समाज में दहशत का माहौल पैदा किया जाता है, लोग घरों में छिपने को मजबूर हो जाते हैं। वास्तव में यह श्रद्धा या आस्था नहीं है। यह पाखण्ड और अन्धविश्वास है जिसके कारण लोगों को गुमराह किया जाता है। आस्था के नाम पर उपद्रव मचाने वाले लोग कोई भक्त या संत के अनुयायी नहीं हैं और न ही राम रहीम, रामपाल जैसे लोग संतों की श्रेणी में आते हैं। इन लोगों को संत की क्या परिभाषा होती है? ये भी नहीं पता है। ऐसे मूर्खों के अनुयायी बनने वाले भी मूर्ख ही कहलाएंगे और इसी तरह मारे जाएंगे। एक सच्चा संत या सच्चा भक्त कभी भी समाज को हानि पहुंचाने का कार्य नहीं कर सकता। राम रहीम या रामपाल जैसे संतों को उनके द्वारा किए गए कर्मों की सजा मिली है। जो कर्म राम रहीम ने अपने ऐश्वर्य के बल पर, अपनी ताकत के बल पर, अपने अज्ञान के कारण किए थे, उन्हीं कर्मों के परिणामस्वरूप आज उसे सजा मिली है। परमात्मा की न्याय व्यवस्था अटल है। कोई भी प्राणी किए गए कर्मों के फल से बच नहीं सकता।

वास्तव में आज समाज को ऐसे राम रहीम जैसे अनेकों पाखण्ड़ियों से बचाने की आवश्यकता है जो धर्म और आस्था के नाम पर उन्हें गुमराह करते हैं। ऐसे लोग किस प्रकार इतनी संपत्ति और ताकत अर्जित कर लेते हैं, प्रशासन को इसके ऊपर निगरानी रखनी चाहिए। एक सच्चे संत का काम समाज को नई दिशा देने का है, लोगों को पाखण्ड़ और अन्धविश्वास से छुडाने का है, समाज से बुराईयों और कुरीतियों को दूर करने में सरकार का सहयोग करना है, लोगों के अवगुणों को छुडाकर उन्हें सन्मार्ग दिखाने का है। संत या सन्यासी का उद्देश्य संपत्ति अर्जित करना नहीं है, धन-दौलत, ऐश्वर्य, सुख के साधन एकत्रित करना नहीं है। बल्कि वेद के अनुसार त्यक्तेन भुञ्जीथा: त्यागपूर्वक भोग करते हुए जीवन बिताना है। परमात्मा की उपासना करते हुए अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना है। राम रहीम जैसे ढोंगी संतों के जीवन का ऐसा कोई भी उद्देश्य प्रतीत नहीं होता। ऐसे ढ़ोंगी तो केवल धन-संपत्ति अर्जित करते हुए प्रभुत्व , स्वामित्व चाहते हैं। इन ढ़ोंगियों को महर्षि मनु के द्वारा बताए गए धर्म के दस नियमों का भी ज्ञान नहीं होगा। ऐसे तथाकथित संत आस्था के नाम पर लोगों का दोहन करते हैं और अपने द्वारा किए गए बुरे कर्मों के फल से बचने के लिए ढाल की तरह प्रयोग करते हैं। ऐसे मूर्ख लोगों को भी विचार करना चाहिए कि ऐसे ढोंगियों के बहकावे में न आए। बलात्कार जैसे किसी भी जघन्य अपराध को क्षमा नहीं किया जा सकता है। इसे देश का दुर्भाग्य नहीं तो और क्या कहा जाएगा कि एक बलात्कारी बाबा के लिए लाखों की संख्या में अनुयायी इकट्ठे हो जाते हैं और एक दूसरी तरफ एक गौरक्षक, गोचरान भूमि को खाली कराने के लिए अनशन करने वाले संत गोपालदास का समर्थन करने के लिए नाममात्र लोग हैं। एक बलात्कारी, दुराचारी बाबा के स्थान पर लाखों की संख्या में इकट्ठे होने की बजाय संत गोपालदास जी के समर्थन में इतने लोग खड़े हो जाते तो सरकार को वह जमीन मजबूर होकर खाली करवानी ही पड़ती जिसके ऊपर भू-माफियाओं ने कब्जा करके रखा हुआ है। ऐसे लोगों की बुद्धि को आस्था के नाम पर कुंठित किया गया है जो धर्म के विषय में सोचने विचारने की क्षमता नहीं रखते। जिनके लिए बाबा वाक्यं प्रमाणम् ही सब कुछ है। ऐसे लोगों के लिए वेद, गीता और शास्त्र क्या कहते हैं? कोई महत्व नहीं रखते। जो इनके अज्ञानी गुरू ने कह दिया वही सब कुछ है।

एक अपराधी को सजा सुनाने मात्र के लिए दो राज्यों में एमरजैंसी लगा दी जाती है, काम-काज ठप्प किया जाता है, स्कूल कॉलेज बन्द कर दिए जाते हैं, सरकारी कामकाज रोक दिया जाता है, इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है। एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं को संत, महात्मा, परमात्मा का दूत कहता है वो अपना शक्ति प्रदर्शन ऐसे करता है जैसे कोई जंग लड़ने जो रहा हो। शर्म आनी चाहिए कि बलात्कार का आरोपी होते हुए भी अपने आपको सही ठहराने के लिए, प्रशासन के ऊपर दबाव बनाने के लिए, समाज के अशांति फैलाने के लिए हर प्रकार के हथकंड़े अपना रहा है। क्यों प्रशासन मूकदर्शक बन कर बैठा हुआ था? समय रहते उचित प्रबन्ध क्यों नहीं किया गया? लाखों की संख्या में लोगों की भीड़ कैसे इकट्ठी हो गई? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। सैकड़ों की संख्या में गाड़ियों का काफिला राम रहीम के साथ आता है और सरकार तथा प्रशासन कुछ नहीं कर सका। यह बहुत शोचनीय विषय है। हाईकोर्ट का यह आदेश प्रशंसनीय है कि राम रहीम की संपत्ति जब्त करके नुक्सान की भरपाई की जाए। जितनी भी अवैध संपत्ति राम रहीम ने अर्जित की हुई है, उसको जब्त करके नुक्सान की भरपाई की जानी चाहिए। सरकार को चाहिए कि समाज में अशांति फैलाने वाले उपद्रवी तत्वों के साथ सख्ती से पेश आना चाहिए ताकि वे और हानि न कर सके। ऐसे लोगों को भी अच्छी तरह से यह बात समझ लेनी चाहिए कि कर्म के फल से कोई भी नहीं बच सकता। बुरा कर्म किया है तो कोई भी पीर पैगम्बर, गुरू उस बुरे कर्म के फल से नहीं बचा सकता। जो तथाकथित गुरू लोगों के दु:खों को दूर करने का प्रलोभन देते हैं, उनकी समस्याओं को क्षण भर में दूर करने का दावा करते हैं , वे लोगों को भ्रमजाल में फंसाने का कार्य करते हैं। अगर इनमें दुखों को दूर करने या समस्याओं के समाधान करने की क्षमता होती तो राम रहीम, रामपाल, आशाराम आदि स्वयं जेल में नहीं होते। इनका कार्य सिर्फ आस्था के नाम पर लोगों को गुमराह करना है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

वेदों में मानव मन: शक्ति एवं परमात्मा की प्राप्ति

-ले०मृदुला अग्रवाल, 19 सी सरत बोस रोड कोलकाता

(गतांक से आगे)

बड़ी अच्छी प्रार्थना है। बंगला के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय ने मन के ऊपर बड़ा अच्छा विवरण दिया है- आकर्षक प्रलोभन के आगे दुर्बल मन फिसल जाता है, झुक जाता है, किन्तु चरित्रवान् व्यक्ति उन्हें ठुकरा देता है, वासनाओं के तूफान के बीच भी अडिग रहता है। विषम परिस्थितियों में भी सुन्दर मन हारता नहीं और न कभी विषय वासनाओं से पराजित होता है। अगर हम युवकों में व्यक्तिगत चरित्र की पवित्रता पैदा कर सकें और उनके इस चरित्रबल को राष्ट्र-कल्याण की दिशा में मोड़ सकें तो यह देश की सर्वोत्तम सेवा होगी। मानव-समाज बहुत बिगड़ गया है। भौतिक विलासिता एवं भौतिक आनन्द ही सर्वस्व छा गया है। मानवीय मन में धन का विस्तार घर कर बैठा है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर मानव कुत्सित कर्म में ज्यादा प्रविष्ट हो रहा है। मानव अगर स्वयं के मन की परिस्थितियों को नहीं सुधारेगा तो अन्धकाररूपी गर्त में गिरता चला जायेगा। वेदों के अनुकूल चलना जरुरी है। वेद ऐश्वर्य देकर भी शान्ति देता है। मानव जब सुकर्म में प्रवेश करता है तभी से परमात्मा को अपना स्वामी मानने लगता है। समाज-सुधार के लिए, बच्चों के मन और चरित्र को उज्जवल बनाने के लिये उनमें सुसंस्कार, दृढ़ संकल्प, सत्कार्य करने की भावना डालनी होगी, तभी वे प्रगति के पथ पर प्रशस्त होगें। संसार एक भयानक रणभूमि है। इसमें प्रतिक्षण अपने-अपने अस्तित्व हेतु प्रत्येक जीव संघर्ष कर रहा है। अच्छे कर्मों से मन का उत्थान, एवं चरित्र-निर्माण अति आवश्यक है। मनुष्यता का एक ही लक्ष्य हैं-आध्यात्मिक अन्त:करण का निर्माण। समाज को ज्ञान-विज्ञान देकर धर्म में लगाना व सुधारना एक महान् प्रयास है।

ज्ञान मन से उत्पन्न होता है। ज्ञान का लक्ष्य है निर्माण, कल्याण और उत्थान। 'वेद' का अर्थ भी ज्ञान है। ज्ञान हमारा नेतृत्व करे और विज्ञान हमारी सुख-सुविधा का कारण होवे तो हम ऐहिक तथा पारलौकिक आनन्द और शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मा ! हमारे 'मन' को अपने प्रकाशित स्वरूप में लगाओ। शुभ-संकल्पों के मन में उत्पन्न हो जाने से परमात्मा इन्द्रियों से आनन्द देने के लिये स्वयं को प्रकाशित करता है। मन ही इन्द्रियों का स्वामी है। मन रूपी सूर्य की इन्द्रियां किरणें हैं। मानव के सोते समय मनरूपी सूर्य की किरणें अस्त हो जाती है। सामवेद, मन्त्र-१६ के अनुसार-

''मनुष्य श्रद्धा से परमात्मा का ध्यान करते हुए बुद्धि को प्राप्त हो-इसलिये सूर्य किरणों के साथ परमेश्वर को हृदय में विराजित करें। मन्त्र में यह सुझाया है कि परमात्मा की उपासना से बुद्धि बढ़ती है। जिससे मिथ्याज्ञान निवृत्त होता है। मिथ्याज्ञान की निवृत्ति से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। ''मनसा'' पद इसलिए है कि 'मन' से, श्रद्धा से उपासना करे न कि दिखाने के लिये दम्भमात्र। जो 'मन' से परमात्मा का ध्यान करता है वह हृदयकुण्ड में ज्योतिस्वरूप अग्नि-परमात्मा को सुलगाता है।'' इस ज्योति से मनुष्य के मन में अज्ञान से उत्पन्न अन्धकाररूपी बुरे विचार नष्ट हो जाते हैं और भक्त का मन शुभ और दिव्य हो जाता है। अच्छे विचार 'मन' को तृप्त करते हैं और मन पवित्र हो जाता है।

मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य दिव्य ज्योति परमात्मा को प्राप्त करना है। वेदवाक्यों द्वारा परमात्म-विषयक श्रवण किये हुए अर्थ को युक्तियों द्वारा मन से विचारने का नाम 'मनन' है-मनन को निश्चित बुद्धि द्वारा धारण करने को 'निदिध्यासन' कहते हैं।

''परमात्मा उपदेश करते हैं कि हे संसार के यात्री ! तुम इस दिव्य रथ को मन से धारण करते हुए सर्वत्र विचरो अर्थात् मन को दमन करते हुए इस रथ में इन्द्रियरूपी बड़े बलवान घोड़े जुते हुए हैं जो मनरूपी रासों को दृढ़ता से पकड़े बिना कदापि वशीभूत नहीं हो सकते, इसलिये तुम मनरूपी रासों को दृढ़ता से पकड़ो अर्थात् मन की चंचल वृत्तियों को स्थिर करो ताकि यह इन्द्रियरूप घोड़े इस शरीररूपी रथ को विषय मार्ग में ले जाकर किसी गर्त में न गिराये।''

ऋग्वेद, मंडल-७, सूक्त-६८, मन्त्र-2 एवं कठोपनिषद् १-२-३ में भी। अपने सदाचारों से सम्पूर्ण दुराचारों को त्यागकर, सारथीरूपी बुद्धि से, मनरूपी रासों से अमृतपान करते हुए, रथी जीवात्मा को धर्म की अन्तिम सीमा पर पहुँचाकर परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार संस्कृत आत्मा द्वारा संसार की यात्रा करने से सब मार्ग सुगम हो जावेंगे।

विद्वान् अपने मन की विचार शक्ति द्वारा हमारा मार्ग-दर्शन करते हैं। 'मन' ३३ देव में एकादश इन्द्रियों में से एक है। परमात्मा जब इन देवों पर कृपा करते हैं तभी इनको प्रकाश मिलता है-इस कारण भी वह वन्दनीय देव है।

नियमित दिनचर्या, सात्विक आहार, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, दुर्बल मन: शक्ति को मजबूत बनाता है। खाने-पीने के उपयोग में आने वाले पदार्थों का सात्विक, राजसी एवं तामसिक प्रभाव, शरीर, मन एवं आत्मा पर पड़ता है। 'मन' अन्नमय है। इसकी उत्पत्ति के लिये मेघ निमित्त है। अगर अन्न सुन्दरता से न बनाया गया हो तो उसे ग्रहण करके मन आनन्दित नहीं होता जिससे परमात्मा का स्मरण भी ठीक से नहीं हो पाता। अन्न व भोजन से 'मन' प्रफुल्लित होता है तो मानसिक तनाव भी कम होता है जिससे मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। स्वस्थ मन में दूसरे के सुख की एवं हित की कामना रहती है। मानसिक रोगी का मन विभिन्न दिशाओं में भ्रान्तिवश भटक जाता है। वह क्षण-क्षण में बातों को बदलता है। कभी भूतकाल तो कभी भविष्यकाल के बारे में बोलता रहता है। ऐसे मानसिक रोगों को उचित आश्वासन प्रदान कर विविध उपचारों से शान्त व स्वस्थ किया जाना अपेक्षित है। स्वच्छ अन्त:करण में ही परमात्मा होते हैं-इसी का नाम सुखदात्री स्थिति (स्वर्ग) है। किसी की प्रशंसा सुनकर ईर्ष्या न हो तो उसका मन स्वस्थ है, चरित्र अच्छा है, उसमें सज्जनता है। दुर्बुद्धि वाले द्वेषी व्यक्ति से हम सदैव दूर ही रहें। ''योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्म:'' अर्थात् जो अज्ञान से हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाण-रूपी मुख के बीच दग्ध कर देते हैं। परमात्मा से हमारी यही प्रार्थना भी है। मन के राग-द्वेष समाप्त हो जाते हैं जिनसे पाप से मुक्ति प्राप्त होती है। मन को पापरहित होना चाहिए।

पुरुषस्य मन एवं ब्रह्मा (कौ० १७-७) कौषीतकि ब्राह्मण के अनुसार पुरुष का 'मन ही ब्रह्मा' है। मानव का एकमात्र स्तुत्य (इन्द्र) परमेश्वर है। हम शास्त्र-वचन से परमात्मा का न केवल गुणगान करें अपितु उनका 'मनन' करना भी जरुरी है। शतपथ (१।५।१।२१) में 'मन' को अध्वर्यु कहा गया है। जीवन-यज्ञ के 'होता' आत्मा का यह एक सहायक 'ऋत्विक' ही है। यज्ञ की वेदी के स्थान पर वेदी-रचना तथा अन्य सामग्री जुटाना अध्वर्यु का ही काम है। जीवन-यज्ञ की साधक सामग्री जुटाना अध्वर्यु का ही काम है। जीवन-यज्ञ की साधक सामग्री 'प्राणशक्ति' को जुटाना 'मन' का काम है। प्राणशक्ति युक्त सुदृढ़ मन ही जीवात्मा की शत्रुभूत दुर्भावनाओं को रुलाकर भगाने में समर्थ बन पाता है। स्वार्थ-त्याग पदार्थ के लिये प्रयत्न करना ही 'महायज्ञ' होता है। यज्ञ से 'इदन्न मम' अर्थात् (सब तेरा है मेरा कुछ नहीं) की भावना आती है, जिससे 'मन' को शान्ति प्राप्त होती है। भगवद् गीता में ८ प्रकार के यज्ञ का वर्णन मिलता है-मानस ज्ञान-यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, द्रव्य-यज्ञ, दान-यज्ञ, जप-यज्ञ, तप-यज्ञ, देव-यज्ञ एवं पंच महायज्ञ। सभी यज्ञ किसी न किसी रूप में मानव-मन को शान्ति प्रदान करते हैं। दान और त्याग की भावना से मन उन्नत होता है। मनुष्यता के 'तप' से मन भी तपे तो परमात्मा आते हैं। ऐसा भाव 'तेन त्यक्तेज भुंजीथा' यजुर्वेद, अध्याय-४०, मन्त्र-१, अर्थात् सब कुछ परमात्मा का ही तो है-ऐसी त्यागपूर्ण भावना से 'मन' में शान्ति ही शान्ति होती है।

'मन' बड़ा चंचल और प्रमथन स्वभाव वाला है, बड़ा दृढ़ और बलवान् है, इसलिये उसका वश में करना वायु की भांति अति दुष्कर है। परन्तु दुष्कर प्रकृति के मन को भी अगर बारम्बार अभ्यास

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पर्यावरण संरक्षण यज्ञ

-ले० पं० वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

(गतांक से आगे)

माधुर्ययुक्त शान्तिदायक पर्यावरण-

ओ३म् मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।

माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः स्वाहा।। यजु. 13/27

हवाएं माधुर्ययुक्त होकर यथा समय, यथा स्थान बहती रहें, हानिकारक होकर नहीं। नदियां भी मधुर बनकर अर्थात् निर्मल, स्वच्छ, पवित्र और स्वास्थ्यकर होकर बहें। ओषधियां हमारे लिए माधुर्ययुक्त हों।

जब शीतल माधुर्ययुक्त अर्थात् आनन्ददायक हवाएं बहती हैं. उत्तम जल वाली नदियां प्रवाहित होती हैं और ओषधियां अत्यन्त उत्तम होती हैं तभी सामान्य जीवन सुखदायक, खुशहाल और स्वास्थ्यवर्धक होता है।

ओ३म् मधु नक्तं उतोषसो मधुमत् पार्थिव रजः।

मधु द्यौरस्तु नः पिता स्वाहा।। यजु. 13/28

हमारे लिए रात्रि मधुर अर्थात् आरामदायक और शान्तिकारक हो, निद्रा अच्छी प्रकार आए। उषाकाल भी मधुर हो अर्थात् उषाकाल सभी दोषों को दूर कर दे। यह पार्थिव लोक अर्थात् पृथिवी की मिट्टी भी माधुर्य-युक्त = शक्तिदायक हो। शरीर पर मिट्टी लगने-लगाने पर सब दोष दूर हो जाएं। पितृ-तुल्य यह द्युलोक हमारे लिए माधुर्ययुक्त हो।

ओ३म् मधुमान् नो वनस्पतिः मधुमान् अस्तु सूर्यः।

माध्वीर्गावो भवन्तु नः स्वाहा।। यजु. 13/29

सारी वनस्पतियां हमारे लिए माधुर्य लिए हुए हों। सूर्य माधुर्ययुक्त अर्थात् कोमलतापूर्ण ताप, ऊर्जा और प्रकाश वाला हो। गौंए भी हमारे लिए माधुर्यपूर्ण दूध देने वाली हों।

वस्तुतः सूर्य की किरणों से वनस्पतियां भी प्राणशक्ति सम्पन्न होती हैं। उनका सेवन करने वाली गौएं भी उत्तम दूध देने वाली होती हैं। गोदुग्ध का प्रयोग करके मनुष्य भी बलवान् और बुद्धिमान् बनता है।

ओ३म् द्यौः शान्तिः, अन्तरिक्षं शान्तिः, पृथिवी

शान्तिः आपः शान्तिः, ओषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिः, विश्वे देवाः शान्तिः, ब्रह्म शान्तिः, सर्वं

शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।। यजु. 36/17

द्यौः शान्ति-

1. द्युलोक शान्ति देने वाला हो अर्थात् द्युलोक का सूर्य शान्तिकर होकर तपे।

अन्तरिक्षं शान्ति-

2. अन्तरिक्ष लोक हमें शान्ति दे अर्थात् अन्तरिक्ष लोक का पर्जन्य (मेघ-बादल) अतिवृष्टि और अनावृष्टि का कारण न बने।

पृथिवी शान्ति-

3. पृथिवी शान्तिदायक हो अर्थात् पृथिवी लोक में शान्ति स्थापित हो। उपद्रव आदि न हों। पृथिवी में असन्तुलन अर्थात् भूचाल, भूमि-खनन, निर्माण हेतु पर्वतीय विस्फोट (सुरंग, सड़क, भवन आदि) परीक्षणार्थ परमाणु विस्फोट आदि से पृथिवी में असन्तुलन-हलचल आदि होने पर अशान्ति होती है। अतः हम सभी पृथिवी पर शान्ति स्थापित करने हेतु प्रयत्नशील हों।

आप शान्ति-

4. जल हमारे लिए शान्तिदायक हों। नीरोगता प्रदान करें। शरीर शुद्धि के लिए जल सबसे अधिक सहायक है। मनुमहाराज कहते हैं-

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्तिः।।

जल से शरीर के सारे अंग शुद्ध होते हैं। उषा काल में जलपान से शरीर का आन्तरिक भाग भी शुद्ध होता है।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जब जल शुद्ध पवित्र और निर्मल होगा तभी हमारा शरीर भी शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनेगा। शुद्ध जल केवल मनुष्य के लिए ही नहीं अपितु, पेड़-पौधे, वनस्पतियों तथा जीव-जन्तुओं के जीवन का रक्षक है।

ओषधयः शान्ति-

5. सोमलता आदि ओषधियां हमें शान्ति दें। रोगनिवारणार्थ जड़ी-बूटी के रूप में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे प्रयोग किए जाते हैं। अन्न भी औषधि है। फल, फूल तथा अन्य खाद्य पदार्थ भी ओषधि हैं। परन्तु जीभ के स्वाद के लिए प्रयुक्त खट्टे-मीठे, तले, चटपटे, अपाच्य तामसिक भोज्य पदार्थ ओषधि के अन्तर्गत नहीं आते।

सात्त्विक भोजन ही औषधि है। यही शान्तिकारक है-

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः।।

वस्तुतः अन्न क्षुधा-रोग की औषधि है। ओषधि के रूप में सन्तुलित मात्रा में प्रयोग किया गया अन्न लाभदायक होता है। अतः आयुर्वेद कहता है-

हितभुक् मितभुक् ऋतभुक्।

हितकारी खाओ, सन्तुलित खाओ, ऋतु-अनुकूल खाओ।

वनस्पतयः शान्ति-

6. वट आदि वनस्पतियां हमें शान्ति दें। वनस्पतियां भी शरीर की रक्षक हैं। शरीर की रक्षा के उद्देश्य से ही इनका सेवन करना चाहिए।

गाय, भैंस, भेड़, बकरी, गधा, घोड़ा, हाथी, मृग आदि पशु भी औषधि, वनस्पति सदृश पेड़-पौधों पर ही निर्भर हैं और मनुष्य इन पशुओं पर आश्रित है। इस प्रकार ये सभी एक दूसरे के सहयोगी हैं। अतः जड़-चेतन अन्योन्याश्रित हैं।

विश्वे देवा शान्ति-

7. प्रकृति के सभी देव हमें शान्ति दें। अग्निदेवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर् देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।। यजु. 14/20

ब्रह्म शान्ति-

वेदज्ञान हमें शान्ति दे। जिस पदार्थ के गुणधर्म का ज्ञान नहीं होता, वही हानिप्रद हो जाता है। वैदिक और लौकिक अर्थों का ध्यान रखें। अर्थ का अनर्थ न करें। यथा-शुक्तां बरधरं विष्णुं.... राजा भोज और लकड़हारा-यथा बाधति बाधते।।

सर्वं शान्ति-

9. जड़-चेतन सभी शान्तिदायक हों।

शान्तिः एवं शान्तिः

10. शान्ति भी शान्तिदायक हो। कहीं हमारी शान्ति भी अशान्ति का कारण न बन जाए। शान्ति के लिए शरीर का क्रियाशील-गतिशील होना अत्यावश्यक है।

सामने आग लगी हो और मैं शान्त बैठा रहूँ, हाथ-पैर न हिलाऊं तो ऐसी शान्ति अनर्थ का कारण बन कर अशान्ति ही उत्पन्न करेगी।

शरीर भी शान्त हो और मन भी। मन अशान्त हो तो भी शान्ति का अनुभव नहीं हो सकता।

सा मा शान्तिरेधि

11. वही सच्ची शान्ति हमें भी प्राप्त हो। त्रिविध शान्ति की प्राप्ति हो। इसका अर्थ है-त्रिविधताप। इस संसार में तीन प्रकार के दुःख हैं-

1. आध्यात्मिक-जो आत्मा, शरीर में अविद्या, राग, द्वेष, काम, क्रोध, अज्ञानता और ज्वरपीड़ा आदि से होता है।

2. आधिभौतिक दुःख-जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को, एक प्राणी से दूसरे प्राणी को होना। शत्रु, व्याघ्र, सर्प आदि से।

3. आधिवैदिक-दैवी आपत्ति-भूचाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखा पड़ना आदि।

दैहिक दैविक भौतिक तापा।।

यह तीनों प्रकार की पीड़ा-अशान्ति-दुःख की निवृत्ति होने पर ही सुख-शान्ति की प्राप्ति हो सकती है।

आइए, शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करें।

पौधारोपण किया

आर्य गर्ल्ज स्कूल बठिण्डा के प्रांगण में पौधारोपण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल जी उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग जी, मैनेजर श्री निहाल चन्द सचदेवा जी प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी, समूह स्टाफ एवम् बच्चे शामिल हुए। स्कूल के छोटे व बड़े बच्चों ने अपने स्कूल के प्रांगण में अपने हाथों से काफी पौधे लगाएँ। स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने बच्चों को पौधे लगाने के बारे जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को बताया कि पेड़-पौधे हमारे जीवन का आधार है। हमें अपने जीवन में अवश्य ही पेड़ पौधे लगाने चाहिए तथा इनकी देखभाल करनी चाहिए। पेड़ पौधों के द्वारा ही धरती पर बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग को कम किया जा सकता है। अपने घर तथा आसपास पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया। मैडम रीटा बांसल ने भी बच्चों को बताया कि पेड़ों से हमें शुद्ध वायु मिलती है। यह हमें आक्सीजन देते है और जहरीली गैसों को समाप्त करते है। लगातार बढ़ रहें प्रदूषण से बचने के लिए हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए तथा इनकी देखभाल करनी चाहिए। बच्चों ने यह जानकारी प्राप्त करने पर संकल्प किया कि हम अपने घरों में तथा आसपास के पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए पेड़-पौधे लगायेंगे तथा उनकी देखभाल करेंगे। अपना घर और स्कूल को भी स्वच्छ रखेगें। **-आर्य समाज चौक, बठिण्डा**

कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया

18 अगस्त को श्री कृष्ण जी के जन्म उपलक्ष्य में गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ जिसे अरविन्द शास्त्री जी ने कराया। यजमान राजेश, अनीता मरवाहा, अजय-पूनम सूद थे। बहनों ने भी बहुत श्रद्धा तथा उत्साह से भाग लिया। संयोगिता जी सुलक्ष्मा जी, शशी आहुजा, वाला चोपड़ा, आदि ने भाग लिया। यजमान पद ग्रहण किया। भाईयों ने भी हवियाँ प्रदान की।

अनन्तर बड़े हाल में प्रोग्राम शुरू हुआ माननीय अध्यक्षा जी उषा कालड़ा ने ज्योति प्रज्वलित की सहयोग किया। प्रधान इन्द्रा शर्मा, किरण टंडन, तालियो से हाल गूँजा जनक आर्य ने सबका अभिनन्दन तथा स्वागत करते हुए श्री कृष्ण जी के जन्म के विषय पर अपनी बात कही कि लोगों में कहना है कि हम श्री कृष्ण जी को नही मानते लेकिन भाइयो बहनों हम तो उनके गुणो की पूजा करते योगेश्वर कृष्ण 16 कला संपूर्ण थे, महान योद्धा महान राजनीतिज्ञ, यज्ञ प्रेमी नित्य यज्ञ करते, अष्टांग योग को जानने वाले योगीराज, गीता ज्ञान देने वाले प्रकाश स्तंभ थे क्या नहीं था उनमें कुशल सारथी ऐसे महामानव को हमने क्या बना दिया। हम उनके गुणों में से कुछ ग्रहण करे, आये हुए भजनोपदेशक जगत वर्मा जी का फूल माला से स्वागत किया। डा. विजय सरीन, श्रवण बत्तरा प्रधाना इन्द्रा शर्मा आदि ने वर्मा जी पं. अरविद जी का उषा जी का स्वागत किया। जनक आर्य ने उनके प्रार्थना की अपना प्रोग्राम शुरू करे उन्होंने बहुत सुन्दर भजनों की लड़ी बाँधी तेरा हर इक कम है कमाल दा, बन कर सूरज चाँद आदि देश भक्ति का भजन हाल भरा हुआ था कोई जरा भी उठा नहीं बड़ी श्रद्धा से लगन से प्रोग्राम का सब ने आनन्द लिया। अन्त में अध्यक्षा जी बहुत सुन्दरता से श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला। जनक आर्य ने इन्द्रा शर्मा जी ने सब दूर-दूर से आने वालो का स्कूल की अध्यापक वर्ग का सभी विद्वानों का स्वागत किया, धन्यावाद किया।

जिला प्रधाना राजेश शर्मा जी ने सर्व प्रथम पहुँच कर उत्साह बढ़ाया। इस प्रोग्राम को सफल बनाने में सब बहनों का पूरा-पूरा सहयोग रहा। भाईयों ने पूरा भाग लिया, सुरेन्द्र टन्डन महामंत्री, संजीव चड्डा, प्रधान सतपाल नारंग, सुरेश चड्डा सब के नाम न लिखकर सबने बड़ा ही साथ दिया। हम जगत वर्मा जी, आदि सब के धन्यवादी है।

जल पान, प्रसाद के बाद सभा समाप्त हुई।

गतिविधि

स्त्री आर्य समाज में सब त्योहार उत्साह से मनाये जाते है। ऋषि दयानन्द का जन्म, शिवरात्री अभी 15 अगस्त का दिन मनाया बहनों देश भक्ति के भजनों से समय बाँध दिया। 2-3 दिसंबर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आदि। गुरुकुलो की यथापूर्वक सहायता के लिए सदा तैयार रहते क्योंकि गुरुकुलों में आर्य समाज बढ़ेगा, किसी सेवा के लिए हम पीछे नहीं है, आर्य समाज के नियमों पर चलने की चेष्टा रहती है, हमारे प्रधाना जी गुरुकुल देहरादून से शिक्षित है बड़ी श्रद्धावान है।

-स्त्री आर्य समाज, दाल बाजार, लुधियाना

श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न

आर्य समाज, सैक्टर, 22-A चण्डीगढ़ में एक सप्ताह का दिनांक 31-07-2017 से 06-08-2017 तक बड़े ही हर्षोल्लास से श्रावणी उपाकर्म पर चतुर्वेदशतकम् का विशेष पारायणयज्ञ किया गया। जिसकी पूर्णाहुति रविवार को हुई। सैंकड़ों लोगों ने अपने पुराने यज्ञोपवीत परिवर्तन कर एवं नवीन धारण कर इस महोत्सव का आनन्द उठाया। यज्ञब्रह्मा आचार्य राजू वैज्ञानिक दिल्ली थे, जिनका मार्मिक उपदेश ने लोगों का ज्ञान वर्धन किया। वेद पाठ शुद्ध-सुन्दर मन्त्रोच्चारण श्रीमती विनीता वेदरत्न-स्नातिका पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी ने किया। रूड़की से श्री कल्याण सिंह वेदी के उत्तम-उत्तम मनोहारी भजनों ने श्रोतावृन्द को मन्त्रमुग्ध कर दिया। जीन्द से योगाचार्य डा. सूर्यदेव आर्य ने बड़े ही रोचक ढंग से स्वास्थ्य चर्चा में चार बातें कहीं (रखीं)। 1. जल्दी सोना-जल्दी उठना। 2. कच्चा आहार का सेवन दिन में एक बार अवश्य करना 3. खिल-खिलाकर हंसना व ताली बजाना। 4. प्राणायाम को समयानुसार न त्यागना। स्वामी ब्रह्मवेश जी की अध्यक्षता रही तथा प्रधान जी ने आये हुए समस्त विद्वत जनों एवं सभी महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद किया।

योगीराज कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया

रविवार दिनाँक 13-8-2017 को आर्य समाज दीनानगर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सबसे पहले सुबह 8 बजे वृहद यज्ञ हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान आर्य समाज के प्रधान श्री रघुनाथ सिंह शास्त्री, मन्त्री रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन बने। यज्ञ के पश्चात् कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सबसे पहले दयानन्द मठ के शास्त्री किशोर जी ने श्री कृष्ण एवं सुदामा पर आधारित मधुर भजन प्रस्तुत किया, भजन के बोल थे-अरे द्वार पालो कन्यैहा से कह दो, मिलने सुदामा गरीब आ गया है। सभी ने शास्त्री जी के साथ-साथ मिलकर भजन गाया। इसके पश्चात् दयानन्द मठ के ही शास्त्री निवास जी ने बहुत ही सुन्दर भजन (वो भावना जगा ले, मत कर बुरा किसी का) प्रस्तुत किया। सभी ने इन मधुर भजनों का आनन्द उठाया। अन्त में कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज का योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र जी के जीवन पर आधारित उदबोधन हुआ। अपने उदबोधन में स्वामी जी ने कहा श्री कृष्ण चन्द्र जी वास्तव में एक योगी थे। उनके पूरे जीवन में एक भी बात ऐसी नहीं थी जो आज के पौराणिक जगत में उनके बारे में लोगों को बताया जाता है। महर्षि दयानन्द जी के शब्दों में उनका जीवन एक आप्त पुरुष के समान था। उन्होंने अपना सारा जीवन मर्यादा में बाँधा हुआ था। जितने भी आततायी राजा हुए उन्होंने सब का एक-एक करके संहार किया, और नारी जाति के सम्मान की रक्षा की। हमें श्री कृष्ण जी के जीवन से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए एवं उनके आदर्शों पर चलने का प्रण लेना चाहिए। इस अवसर पर श्री गन्धर्व राज महाजन, श्री मनोहर सैन ओहरी, श्री सरदारी लाल, श्री रणजीत शर्मा, विनय ओहरी, श्री मुनि लाल महाजन, श्री योगेन्द्र पाल गुप्ता, श्री रण्जीत ओहरी, एवं दयानन्द मठ के सभी शास्त्रीगण, एवं सभी ब्रह्मचारी उपस्थित थे। अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण हुआ कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

-मन्त्री रमेश महाजन आर्य समाज, दीनानगर

श्रावणी उपाकर्म (वेद सप्ताह) सम्पन्न

आर्य समाज नंगल टाऊन शिप में वेदप्रचार सप्ताह दिनांक 07 अगस्त 2017 से 15 अगस्त 2017 तक बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। नौ दिवसीय इस उत्सव में प्रतिदिन प्रातः कालीन हवन यज्ञ के साथ-साथ सायं कालीन हवन यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ।

आर्य समाज नंगल के वयोवृद्ध सदस्य श्री ऐ. डी. सरदाना जी (संरक्षक) जी ने श्रावणी-पर्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्रावणी पर्व स्वाध्याय का व्रत लेने का पर्व है। वेद ज्ञान को ग्रहण करके उसे अपने आचरण में लाकर श्रेष्ठ मानव बनने का प्रयत्न करना चाहिए। श्री सरदाना जी प्रतिदिन वेदोपदेश देते रहे। श्रीमति नरेश सहगल जी ने अपनी मधुर आवाज़ में प्रतिदिन प्रभुभक्ति के भजन सना कर सभी को झूमने पर मजबूर किया। गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार से पधारे श्रद्धेय स्वामी श्री वेद प्रिय, पूर्व स्नातकोतर जी ने विशेष श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन योगी श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला और बताया कि वे जीवन पर्यन्त योगी रह कर अपने विवेक एवं पराक्रम द्वारा अधर्म का नाश कर धर्म की स्थापना की। सम्पूर्ण आयोजन को सफल बनाने में आर्य समाज के कर्मठ प्रधान श्री सुरेन्द्र मदान जी ने खूब मेहनत की। मंच का संचालन मन्त्री सतीश अरोड़ा जी ने किया। स्वस्ति मन्त्रों द्वारा सभी आर्य परिवारों ने यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। सप्ताह भर बनने वाले सभी यज्ञमानो ने यज्ञ में पूर्णाहुति डालकर यज्ञ को सम्पन्न किया तथा स्वामी श्री वेद प्रिय जी से आशीर्वाद प्राप्त किया। अन्त श्री सरदाना जी ने सब का धन्यवाद किया। तत्पश्चात् प्रसाद का भी वितरण किया गया।

-मन्त्री आर्य समाज नंगल टाऊन शिप

पृष्ठ 2 का शेष-यज्ञ हुआ आजीवन...

समर्थ हों तथा जीवन मुक्ति के साथ अमृतत्व को प्राप्त करें। हम ऐसे उत्तम कर्म करें कि विद्वानों से हमें सदैव शाबाशी मिलती रहे। हम अपने जीवन को यज्ञ का आकार-प्रकार देते हुए प्रभु-प्रजा सभी को प्रसन्न बनाने के लिए क्षमता भर उद्यत रहें। इस यज्ञीय भावना को रचनात्मक रूप देने के लिए साधन विहीन व्यक्तियों के उदाहरण तो बहुत मिल जाते हैं; किन्तु सुसम्पन्न सज्जन भी सुलभ होते रहते हैं। यज्ञ को आचमन से आरम्भ करने वाले याज्ञिक जल के अमृत रूप को समझ कर नित्य ब्रह्मामृत में सराबोर होने की कामना करते हुए स्वाहा का सुख-वोधन करते हैं। उस दिन यह यज्ञ क्रिया फलित होती देखी गयी, जिस दिन सन्त एकनाथ पैदल गंगोत्री से कन्धे पर गंगाजल की कांवर लेकर रामेश्वर जी पर चढ़ाने जा रहे थे। उन्होंने वहीं जल मरुस्थल में प्यास से तड़पते गधे को पिला दिया, और वह उठकर चल दिया। साथी साधुओं की निन्दा नकारने में सन्त एक नाथ ने क्षण भर की देर नहीं लगायी। देखो साक्षात गंगाधर रामेश्वर भगवान यहीं तृप्त होने आ गये और मुझे कांवर के बोझ से मुक्त कर दिया।

क्या आपको नहीं लगता-"स विशोऽनुव्यचलत" (अथर्व 15.9.1) वह व्रात्य परमात्मा ऐसे आस्थावान् भक्तों की ओर विचरणशील हो जाता है। धर्मराज युधिष्ठिर-योगीराज कृष्ण की भाँति ही यज्ञ प्रेमी थे। राजसूय यज्ञ इसका संकेतक है। उनके जीवन में यज्ञ ज्योति जाज्वल्यमान थी। महाभारत जैसे युद्ध के मध्य भी वे लड़ाई के बाद रात्रि में वेश बदल कर घायल सैनिकों की पीड़ा कम करने के लिये युद्ध क्षेत्र में चले जाते हैं। एक दिन अनुज सहदेव ने इस निमित्त उन्हें वेश बदलते देख लिया और कहा-यह तो ठीक है कि आप घायलों की वेदना कम करने के लिए जाते हैं ; किन्तु वेश क्यों बदलते हैं ? उन्होंने कहा कि यदि मैं अपने असली वेश मैं जाऊँगा; तो शत्रु सैनिक मेरी इस सेवा को ठुकरा सकते हैं। उस दिन सहदेव ने भी यज्ञ-धर्म के रहस्य को समझ लिया था। हमने स्वाहा को कितना सराहा-आइए विचार करें।

पृष्ठ 4 का शेष-यज्ञ हुआ वेदों में मानव..

द्वारा वश में किया जा सकता है तो ऐसे ही प्रयत्नशील मनुष्यों द्वारा मन को वश में कर योग को प्राप्त करना सहज हो जाता है। योग द्वारा परमात्मा का भी साक्षात्कार संभव है, क्योंकि अच्छी तरह शान्त अन्त:करण वाला सावधान एवं भयरहित पुरुष ही मन को वश में कर परमात्मा के परायण स्थित होता है। मन को एकाग्र कर, मन द्वारा इन्द्रियों को वश में कर, दृढ़ निश्चय वाला, कर्मफलों के त्याग द्वारा परमात्मा में स्वयं को अर्पण करने वाला, परमात्मा के स्वरूप का मनन करने वाला मानव ही श्रेष्ठ होता है। जो ज्ञानद्वारा, पापरहित आसक्ति को त्यागकर अन्त:करण की शुद्धि के लिये कर्म करते हैं, वे ही निष्काम कर्मयोगी कहलाते हैं एवं परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

मानव मन: शक्ति अपरम्परा है। मानव सभ्यता और संस्कृति में आने वाले नए-नए परिवर्तन मन की चाहत से ही सम्भव है। ऋग्वेद के अन्त में, मंडल-१०, सूक्त-१६१, मन्त्र-२,३,४, 'मन' की समानता के लिये परमात्मा की आज्ञा है। पूरे विश्व में 'एक ही मन है' यह अनुभूति मानव को अपना जीवन सार्थक बनाने में सहायक होती है। मानव, मन की सम्पूर्ण कामनाओं का जिस समय त्याग कर देता है, आत्मा में आत्मा को अनुभव करता है, प्रिय-अप्रिय में समत्वभाव रखता है, उस समय उसे शीघ्र ही परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है।

विशेष कार्यक्रम

आज दिनांक 20-8-17 को आर्य समाज मन्दिर, जी.टी. रोड़, फिरोजपुर छावनी में एक विशेष कार्यक्रम रखा जिसमें सर्वप्रथम श्री मनमोहन शास्त्री जी ने यज्ञ करवाया उस के उपरान्त पवनवीर प्रबन्धक आदर्श गुरुकुल दूधली मुज्जाफरपुर का विशेष प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने कहा कि यदि जीवन में सुख, शान्ति और आनन्द चाहते हो तो उसके मूल से यानि ईश्वर से जुड़ना होगा क्योंकि वहीं केवल आनन्द का भण्डार है, फिर शेष दुनियां में सभी वस्तुएं फीकी लगेंगी और ऋषि दयानन्द के दर्शाए मार्ग पर चल कर ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है।

शान्तिपाठ और प्रसाद वितरण उपरान्त कार्यक्रम समाप्त हुआ।

शोक समाचार

एक दुखद समाचार आर्य समाज मन्दिर, मेन बाजार फरीदकोट के कोषाध्यक्ष श्रीमान अमरनाथ वर्मा जी का निधन 18-18-2017 को दोपहर 2.30 बजे हो गया। वे 88 वर्ष के थे। आजीवन आर्य समाज से जुड़े रहें। मिलनसार, श्रेष्ठ व्यक्तित्व के धनी एवं-नम्र स्वभाव वाले व्यक्ति थे। वर्मा जी शान्ति प्रिय एवं सभी को नया रास्ता दिखाने वाले व आर्य समाज के कार्यों में रूचि रखने वाले ऐसे व्यक्ति के अचानक चले जाने से आर्य समाज को क्षति पहुँची है। प्रभु उन्हें अपने चरणों में निवास दें।

आर्य समाज जीरा में जन्माष्टमी व स्वतन्त्रता दिवस पर्व मनाया गया

आज दिनांक 15-08-2017 दिन मंगलवार को आर्य समाज जीरा में कृष्ण जन्माष्टमी व आजादी का पर्व बड़ी ही धूम-धाम तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें सबसे पहले इस पर्व का शुभारम्भ वृहदयज्ञ द्वारा किया गया, जिसमें वेद के पावन ऋचाओं से सभी उपस्थित आर्य भाई-बहनों तथा बच्चों ने आहुतियाँ डाली। पं. श्री किशोर कुणाल शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया और आजादी तथा कृष्ण जन्माष्टमी पर्व की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज़ादी दिवस पर्व मनाने का ये मतलब नहीं है, कि हम मनमाने ढंग से मानवता से रहित काम करें, बल्कि देश, समाज व बलिदानियों का ख्याल रखना व उसके सिद्धांतों पर चलना ही स्वतंत्रता दिवस पर्व मनाने का औचित्य है। साथ ही साथ श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर भी रोशनी डालते हुए कहा कि श्रीकृष्ण जी का आचार, विचार व व्यवहार को अपनाना ही सच्चे अर्थों में जन्माष्टमी पर्व मनाना है, न कि उनके ऊपर माखन चोर, रास लीला जैसी गंदी व व्यभिचार भरी लांछना लगाकर व झांकियाँ दिखाकर कृष्ण की छवि को धूमिल कर खुशियाँ मनाना है। अन्त में इस समाज के प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी ने सभी को इन पर्वों की ढेर सारी बधाईयाँ दी और कहा कि ये पर्व सभी के सहयोग व श्रद्धा से सम्पन्न हुआ है इसलिए हम इसके लिए भी सभी को साधुवाद व आशीर्वाद देते हैं कि आप सबके सहयोग से आगे भी हम इसी तरह पर्वों को मनाते रहें। अन्त में शांति पाठ के साथ प्रसाद वितरण किया गया।

-किशोर कुणाल पुरोहित

स्वतन्त्रता दिवस एवं कृष्णजन्माष्टमी पर्व मनाया

मंगलवार 15 अगस्त को आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के प्रांगण में स्वतन्त्रता दिवस और श्रीकृष्ण जन्मोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ राष्ट्रीय ध्वजारोहण राष्ट्रीय गान के साथ हुआ। आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी और महामन्त्री शशीकोमल जी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा श्रद्धानन्द महाविद्यालय की छात्राओं ने राष्ट्रीय गान एवं देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किए। तत्पश्चात् राष्ट्रीय पर्व तथा कृष्णजन्मोत्सव का विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी ने की। मुख्य अथिथि आर्य नेता श्री वेद प्रकाश भल्ला तथा मुख्य वक्ता वैदिक प्रवक्ता डा. पवन कुमार त्रिपाठी जी ने मन्च का संचालन किया। इस अवसर पर श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की छात्राओं ने अपने भजनो से सभी का मन मोह लिया। आर्य प्रचारक श्री रविदत आर्य जी ने भगवान कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

आर्य भजनोपदेशक श्री हेम राज शास्त्री जी ने उस पर्व पर देश भक्ति का गीत गाकर सभी में नया जोश भर दिया। वैदिक प्रवक्ता डा. पवन कुमार त्रिपाठी जी ने देश की आजादी में आर्य समाज की भूमिका पर अपना ओजस्वी वक्तव्य दिया और देश पर कुर्बान होने वाले बलिदानियो को याद किया।

आर्य समाज के मन्त्री शशी कोमल जी ने देश भक्ति का सुन्दर गीत सुना कर वातावरण को सुन्दर बना दिया। मुख्य वक्ता ने भगवान श्री कृष्ण चन्द्र महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें एक महान योगी, कुशल राजनेता, शूरवीर योद्धा, कर्मयोगी, महान त्यागी युगपुरुष बताया। आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी ने आए हुए मेहमानों का धन्यवाद किया और सभी को आर्य समाज का क्रांतिकारी इतिहास पड़ने को प्रेरणा दी। इस सुअवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य श्री पुरुषोतम चन्द्र शर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम में शहर को दूसरी समाजो ने भी भाग लिया। श्री सुरेन्द्र कुमार (काली), श्री संजय गोस्वामी श्री पवन टण्डन, श्री ओम प्रकाश दिलावरी, श्री योगपाल भाटिया, सहगल जी, श्री विद्यासागर श्री बलराज जुल्ली, आचार्य पवन शर्मा श्रीमति सुखजीत कौर, पं. तेजनारायण शास्त्री पं. सिकन्दर शास्त्री, श्री ओम प्रकाश शास्त्री श्री निरजन देव जी समाज सेवक राम नरेश आदि गणमान्य लोग उपस्थि रहे। शान्तिपाठ के साथ फलों का प्रसाद वितरित किया गया।

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर

महिला शक्ति और आर्य समाज सम्मेलन का आयोजन

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में 13 अगस्त 2017 रविवार को महिला शक्ति एवं आर्य समाज विषय पर एक भव्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का शुभारम्भ हवन यज्ञ के द्वारा किया गया। यज्ञ ब्रह्मा पं. मनोहर जी आर्य ने पवित्र वेदमन्त्रों के द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया। सभी श्रद्धालुओं ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां डाल कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। आए हुए सभी विद्वानों ने यजमानों को आशीर्वाद दिया। इस सम्मेलन का आयोजन परम पूज्य महात्मा विशोकायति जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से किया गया। यज्ञ के पश्चात सभी आए हुए महानुभावों ने जलपान ग्रहण किया। जलपान करने के पश्चात श्रीमती हर्ष अरोड़ा जी की अध्यक्षता में सम्मेलन का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर हिसार बरवाला से श्री नरसिंह जी सेलवाल विशेष रूप से अपने साथियों सहित उपस्थित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी एवं उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य विशेष रूप से उपस्थित हुए। श्री प्रेम शर्मा जी यू.के. से विशेष रूप से उपस्थित हुए। सभी विद्वानों ने इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए आर्य समाज की भूमिका हमेशा सकारात्मक रही है। नारी शिक्षा के लिए आर्य समाज ने हमेशा अग्रणी रह कर कार्य किया है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी को समाज का आधारस्तम्भ माना है और नारी शिक्षा पर जोर दिया। महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने में आर्य समाज हमेशा आगे रहा है। इसीलिए आर्य समाज ने पहले भी महिला सशक्तिकरण पर बल दिया है और आगे भी महिलाओं के लिए कार्य करता रहेगा। सभी विद्वानों ने कहा कि नारी समाज का आधार है। महर्षि मनु ने कहा है कि जहां पर नारी का सम्मान होता है, उनकी पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। इसलिए नारी के प्रति व्यक्ति को अपनी सोच को बदलना होगा। आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति कर रही है, उच्च पदों पर आसीन है तो इसका श्रेय आर्य समाज को जाता है। महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने में आर्य समाज ने हमेशा अपना योगदान दिया है। यह सम्मेलन करीब 2 बजे तक सफलतापूर्वक चला। बड़े उत्साहपूर्वक लोगों ने इसमें भाग लिया। इस सम्मेलन को सफल बनाने में जालन्धर की सभी आर्य समाजों ने बढ़-चढ़ कर सहयोग दिया और विशेष रूप से श्री पं. मनोहर लाल आर्य, प्रधान राज कुमार, मन्त्री श्री विशम्बर कुमार, श्री लाभचन्द, श्री रमेश लाल, श्री राज कुमार रत्न, श्री ज्योति रत्न आदि का विशेष सहयोग रहा।

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर में महिला शक्ति और आर्य समाज सम्मेलन के अवसर पर श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी को सम्मानित करते हुये सभा के उप प्रधान एवं आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर के संरक्षक श्री सरदारी लाल जी आर्य, प्रधान श्री राज कुमार, वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदेश शर्मा, पंडित मनोहर लाल आर्य और श्री विशम्बर कुमार जी।

सुदेश कुमार
वरिष्ठ उपप्रधान आर्य समाज

साप्ताहिक हवन यज्ञ एवं श्रावणी पर्व धूमधाम से मनाया

आर्य समाज गांधी नगर-1 जालन्धर में दिनांक 20.8.2017 को साप्ताहिक हवन यज्ञ एवं श्रावणी पर्व का आयोजन धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर प्रातः हवन यज्ञ किया गया जिसके मुख्य यजमान डा. रजनीश जी एवं उनका सारा परिवार जिसमें श्री जोगिन्द्र पाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा कुमारी, उनकी बड़ी बहू परमिन्द्रजीत एवं उनकी दोनों बेटियां अनवी एवं अनन्या जोकि अमरीका से आई हुई थीं, पधारीं। इसके साथ ही श्री जोगिन्द्र पाल जी का छोटा बेटा श्री रोहित कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रेणु भगत जी भी इस हवन यज्ञ में विशेष रूप से पधारे। पंडित प्रिंस जी ने बड़ी श्रद्धा और विधिपूर्वक हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। पंडित जी ने प्रत्येक मंत्र का साथ साथ अर्थ भी समझाया। पधारे हुये परिवारों ने बड़ी श्रद्धा से हवन यज्ञ में आहूतियां डाली। इस अवसर पर पंडित प्रिंस ने हवन यज्ञ हमें क्यों करना चाहिये सविस्तारपूर्वक आये हुये महानुभावों को बताया। उन्होंने कहा कि हमें मनुष्य जीवन मिला है इसलिये हमें हर समय पुण्य कर्म करने चाहिये। उन्होंने कहा कि जीव शाश्वत, अविनाशी एवं नित्य पदार्थ है। ईश्वर भी नित्य है और सृष्टिकर्त्ता है। जीवों के पूर्व जन्मों के पाप व पुण्यों के दुख व सुख रूपी फल देने के लिये ही ईश्वर ने इस सृष्टि को बनाया है और ईश्वर ही इसका पालन करता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य योनि उभय योनि अर्थात कर्म व भोग योनि दोनों हैं और अन्य पशु, पक्षी, कीट व पतंग आदि योनियां केवल भोग योनि है। परमात्मा ने मनुष्य को अन्य इन्द्रियों व सामर्थ्य के साथ एक बुद्धि जैसी सत्यासत्य का विवेचन करने वाली शक्ति दी है। इस बुद्धि से मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को जान सकता है। वेद, दर्शन, उपनिषद व सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ बताते है कि जीवात्मा को मनुष्य जन्म पाप व पुण्यों के समान व पुण्य कर्मों के अधिक होने पर ही मिलता है। इसलिये हमें हमेशा पुण्य कर्म ही करने चाहिये।

इस अवसर पर श्री धर्मपाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती महिन्द्रा देवी, श्री अशोक कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उषा, श्री तिलक राज एवं उनकी धर्मपत्नी लीला देवी, श्री भारत भूषण जी एवं उनकी माता श्रीमती निर्मला देवी जी, पंडित प्रिंस की माता श्रीमती सुदेश कुमारी, श्रीमती कृष्णा कुमारी, श्री ईशर दास सपरा, श्री प्रेम सागर, श्री कस्तूरी लाल, श्रीमती एवं श्री परमिन्द्र कुमार भी उपस्थित थे। यज्ञ के समापन पर मुख्य यजमान परिवार को पंडित प्रिंस द्वारा आशीर्वाद दिया गया। इस अवसर पर श्री जोगिन्द्र पाल जी द्वारा आर्य समाज को दान दिया गया। पिछले महीने भी श्री जोगिन्द्र पाल जी ने आर्य समाज को 14 पंखे नये हाल को दान दिये थे। शान्ति पाठ के पश्चात देसी घी का प्रसाद भी श्री जोगिन्द्र पाल जी के परिवार द्वारा सभी को बांटा गया।

आर्य समाज गांधी नगर-1 जालन्धर में साप्ताहिक हवन यज्ञ के पश्चात आशीर्वाद देते हुये आर्य जन एवं श्री जोगिन्द्र पाल जी का परिवार।

ईशर दास सपरा
कोषाध्यक्ष आर्य समाज

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।